तुलना कीजिये और सोचिये

वर्तमान की प्रचलित युनिवर्सिटी	स्व–रचित शिक्षण पर आधारित स्वराज युनिवर्सिटी
1. अनिवार्य शिक्षण पद्धति – इसमें व्यक्तिगत रूचियों एवं सीखने की विभिन्न शैलियों को महत्व नहीं दिया जाता है।	1. स्व–रचित शिक्षण प्रक्रिया – जहाँ व्यक्तिगत रूचियाँ एवं शैलियाँ ही प्रोग्राम की नींव हैं।
2. किसी विशय को गहराई से जानने एवं समझने के लिये निर्धारित समय एवं अवसर होता है।	2. यहाँ सीखने वाला स्वयं तय करता है कि उसे अपने विशय को गहराई से समझने के लिये कितना समय चाहिये।
3. मूल्यांकन का आधार परीक्षा होती है जो कि डर, हीन भावना एवं प्रतिस्पर्धी माहौल को बढ़ाती है।	3. जबकि यहाँ खोजी अपना मूल्यांकन स्वयं एवं सहभागियों की मदद से करता है। साथ ही वह अपने अनुभवों का पोर्टफोलियो भी तैयार करता है।
4. इसमें शिक्षार्थियों को सरकार एवं कम्पनियों के लिये दर्शक, उत्पादक व उपभोक्ता बनने के लिये तैयार किया जाता है।	4. जबकि इसमें खोजियों को समाज की वर्तमान स्थिति पर सवाल उठाने और उनके हल के लिये दूरगामी प्रयास करने एवं प्रतिबद्ध होकर कार्य करने के लिये तैयार किया जाता है।
5. सिखाने की प्रक्रिया एवं विशय–वस्तु का वास्तविक दुनिया से कोई सरोकार नहीं होता है।	5. यहाँ पर सीखने के अवसर जीवन से जुड़े हुए और स्थानीय एवं वैश्विक परिप्रेक्ष्य की समझ पर आधारित होते हैं।
6. सरकारी या निजी कम्पनियों में नौकरी करने के उद्धेश्य से प्रेरित है।	6. बल्कि यहाँ स्वयं का कार्य अथवा व्यापार शुरू करना मुख्य उद्धश्य है।
7. विद्यार्थियों का उम्र के आधार पर वर्गीकरण होता है।	7. जबकि इसमें विभिन्न आयुवर्ग के मध्य सह–शिक्षण होता है, जिससे सीखने की प्रक्रिया में रोचकता आने के साथ–साथ इसमें निहित भिन्नता और संसाधनों से बल मिलता है।
8. पदानुक्रम और तानाशाही युक्त सीखने का वातावरण है।	8. बल्कि यहाँ साथ में मिलकर सामुदायिक और लोकतान्त्रिक रूप से सीखने का वातावरण मिलता है।
9. कक्षा में विद्यार्थियों की अधिक संख्या के चलते उन पर व्यक्तिगत रूप से ध्यान नहीं दिया जाता है।	9. इस प्रक्रिया में प्रत्येक खोजी को उसकी रूचि के कार्यक्षेत्र में उस्ताद एवं एक ऐसे मित्र का साथ मिलेगा जो उसे सीखने की प्रक्रिया में मार्गदर्शन देंगे।

अपना दिमाग लगाइये और इस सूची को आगे बढ़ाइये